"काँपता नहीं हार के सामने"

"इसकी पढ़ाई आगे क्यू करनी है ? वो तो बुआ जी की आवाज़ थी। उसकी ताने भरी आवाज़ सुनते ही मुझे समझ में आती है। हर हफ़्ते वो यहाँ आती है और माँ से यही बातें दोहराती है। "लड़की को क्यो पढ़ाना है, वो तो शादी करके अपनी पति की सेवा करनी है" कहती है वो। ये सुनकर गुस्से से मेरी शिराएँ में आग लग जाती है। इस गहरी सोच से माँ की आवाज़ मुझे वर्तमान में लायी।

"तारा.. तारा.. तुम कहाँ है"? हाँ वो तो मुझे बुला रही है। मैं हूँ तारा। मेरी माँ-बाप ने बड़ी प्यार और सोच से मुझे। उनकी इच्छा है कि मैं तारे की तरह सबसे ऊँचाई में चमके। पर उसको क्या पता ? मेरी सारी रोशनी मिट गई। हारने का डर, खुद पर शक और आत्मविश्वास की कमी रूपी काले बादल के पीचे ये तारा की रोशनी छुपा रही है।

"तारा .." फिर माँ की आवाज़ उसकी आवाज़ में आनंद का लहर है। उसकी वजह तो मैं ही हूँ। आज मेरी वर्षगाँठ है। मैं आज

अठारह उम्र की हुई हूँ। बुआ जी की सुबह के ताने अब मुझे समझ आया। अब यहाँ की सबसे बड़ी समस्या मेरी उम्र और शादी है। मेरी शादी करवाने तक उनकी मन को चैन नहीं मिलुगाँ। ये सोचकर सीढ़ियों से खुदकर में माँ की पास गई। उनकी खुली आँखों और खुश भरी चेहरा मैंने देखा और मैं सच बोलती हूँ दुनिया में इससे अच्छा कोई ओर दृश्य नही है। उसने मुझे प्रसाद दिया और ममता भरी आँखों से कहा "बुआ की बातो को बुरा मत मानो, वो तो ऐसे हमेशा बोलती हूँ, पर तुम्हें पता है न कि हम हमेशा तेरी साथ रहूगाँ"। माँ की शब्दों सीधे मेरी दिल में लगाया और उसकी असर से मेरी आँखे आँसु से चमका।

बैग लेकर मैंने स्कूल की और निकला। संघर्ष भरी सोच से भरा मेरी मन को प्रकृति बारिश के रूप में आकर तसल्ली दिया। मैंने सामने वाली मोहन-जी की दुकान में कुछ देर खड़ा ~~रुका~~ रहा। मैंने सोचा आखिरकार मेरी समस्या क्या है? कुछ बर्ष पहले मैं कितनी खुश थी, कितनी हिम्मतवाली थी। विद्यालय की

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★
തിയ്യതി....................

Item Code: 952 Participant Code: 027

डर कार्यक्रम में मैं जमा था. पर अब मैं तो सब बात से डरता हूँ, खुद पर ~~विश्वास~~ विश्वास करने में मैं अब पराजित हूँ। आईने के सामने खड़ा होकर मैं सोचता था "क्या मुझसे ये हो पाऊँगा? जब स्कूल में जवाब देने के लिए नाम पुकारती थी तब मैं अपनी हाथ ऊँचा नहीं कर सकता था। जवाब मुझे पता था। डर था कि दूसरे लोग क्या ~~सोचेंगे~~ सोचेंगे। दूसरों के बारे में सोचते-सोचते ~~[illegible]~~ मैं अपने बारे में भूल गया। मैं पढ़ाई अच्छी तरह करता था, पर परीक्षा में उतना अच्छा फल नहीं मिलता था। मैंने खुद से बोलता था "कोशिश करो, अगर हार गया तो ठीक है। फिर से कोशिश करो"। अब वो मंत्र भी नहीं चलाती है। जब मेरे कानों में बजी वर्षा की सरगम मिट गया तब मैंने ऊँचा ~~देखा~~ अंबर में देखा काला बादल था। मैंने स्कूल की ओर निकला तब वो हुआ जो मेरी ~~जिंद~~ जिन्दगी बदली

एक माँ अपनी छोटी बच्ची के साथ

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

सड़क पार करने की इंतज़ार में था। माँ दुकान से कुछ खरीद रहा था। मैंने उस बच्ची को देखकर ~~मुस्क~~ मुस्कुराया। उसने भी एक हँसी लौटा दिया। तब मैंने सोचा दूसरों पर खुशी का रोशनी मैं अब भी ला सकता हूँ। ये सोचकर मैंने फिर भी उसकी तरफ देखा। पर वो तो वहाँ नहीं था। उसकी माँ अब भी दुकान ~~मैं~~ में है। जब मैंने सड़क की ओर देखा तब वो बच्ची अकेला सड़क पार कर रही थी। एक बड़ी ~~ट्रक~~ ~~की~~ लोरी की आवाज़ मुझे होश में लाया। मैंने एक पल रुक दिया। मुझे ऐसा लगा कि एक पल पूरे विश्व रुक गया था। फिर मैंने देखा कोई और उस बच्ची को नहीं देखा सिर्फ मैं। क्या ये खुदा की निशान है? इस बच्ची की जान मेरी हाथ में है? हज़ार सवाल मेरी मन में आया? क्या मैं कर सकता हूँ? शक का भूत मेरी सामने आया, पर इस पल मुझे डर नहीं लगा। ऐसा लगा की मुझे किसी अनोखा शक्ति मिली है।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

उस भूत को अपनी हौसले से मारकर मैंने भागा। लोरी उस बच्ची के आगे पहूचने से पहले मैंने वहाँ आया। अपनी दिल हाथ में लेकर मैं मेरी सारी हिम्मत जमा करके मैंने उसको लेकर सडक पार किया। एक मिनट केलिए मैंने सोचा की वो लोरी मेरी ऊपर से जाया था। पर मैं अब भी साँस ले रही हूँ, मतलब मैं ज़िंदा हूँ। मेरी हाथ में बच्ची रो रही हूँ, मतलब वो भी सुरक्षित है। "खुदा को लाख लाख शुकर" मैंने सोचा।

उसकी माँ भागकर मेरी सामने आया। अपनी बच्ची को हाथ में लेकर वो रोया। वो दृश्य मेरी आँखों में भी आँसू लाया। फिर उसने मुझको देखा, वो कुछ भी नही बोला। सिर्फ मुझे गले लगाया और रोया। उसकी रोने की आवाज़ में मैंने सब सुनाया। उसकी शुकर, प्यार, सब कुछ। भागने की चक्कर में मेरी शरीर पर कुछ ज़ख्म लगाया। उस माँ ने मुझे आसपताल

ले चला। ज़ख्म में पट्टी बांदा और मैं वापस घर चल रहा था। अब स्कूल में आज नही जा सकता। मैंने अपनी बस स्टोप में आकर बैठा। मुझे समय को कोई अंदाज़ा नही था मैंने रात सात बजे तक वहाँ बैठा। मैंने बहुत सोचा। अंत में मुझे समझ में आया कि उतना डरने का ज़रूरत नहीं है। जब हम सबसे डरी अनुभव से गुज़र जाती है तब हमें असीम हिम्मत मिलती है। मैंने आज मौत से मुलाकात किया शायद यही ही वो घटना है वो मेरी जिन्दगी बदल जाती है। मैंने घर गया।

अपनी माँ को गले लगाकर मैंने बोला "माँ डरने मेरे लिए मंज़ूर नहीं"। उसने हैरान होकर मुझे देखा। मैं कुछ और नही बोला। अपने कमरे पर रात की सन्नाटे में मैंने बैठा और निश्चय लिया कि आज से मैं निरंतर परिश्रम करेगें। अपनी सपने तक उठने के लिए। मैं कोशिश करूँगाँ सबसी चमकती तारे बनने के लिए।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

मैं दूसरों की बारें में नही सोचुगाँ। आखिकार ये मेरी ज़िन्दगी है। जीत की कहानी मैं ही लिखना है। मैंने रात की खुबसूरती आकाश की ओर देखा। बहुत तारे चमक रही थी। मैंने सोचा इतनी देर तक तारे बादल की पीछे था। इसका मतलब ये नही है की वो आकाश में नही था। जब काले बादल चले जाती तो वो अपनी पूरी रोशनी से चमकती है।

कल मैंने स्कूल गया। टीचर सवाल पूछा। आज मैंने हाथ उठाया। मेरी पूरा कक्षा एकदम चुप हो गई। मैंने जवाब बोला। उस खामोश में मेरी अंदर की हिम्मत जुड़ा हुआ। बुआ जी आज भी आया और ताने मारा, पर मैं आज उनको ध्यान नही दिया। आगे का दिन ऐसे चला। मैंने अच्छी तरह पढाई किया और बारहवी की परीक्षा अच्छी तरह लिखा।

परीक्षा की फल आया। मुझे अच्छी रिज़ल्ट मिला। मैंने माँ की चेहरा देखा उसकी आँखे गर्व से चमक रही

Item Code: 952 Participant Code: 027

थी।

आज विद्यालय में सम्मानदान है। मुझे भाषण देने के लिए उसने स्वीकार किया। माईक के सामने खड़ा होकर मैंने खुद की ओर देखा। मेरी उँगली आज नहीं काँप रही है, मेरी आवाज आज नहीं टूट रही है, मेरी सिर आज ऊँची रही है। मैं अपने बारे में सोचकर अभिमान करता हूँ। मेरी भाषण की पन्ने पलटे हुए मेरी होंठों में एक हँसी फैलाया। मैंने बोलना शुरू किया "मंजूर नहीं है मुझे हारने के लिए, जीत लूँगा मैं ~~अपने लिए~~, अपने परिवार के लिए, अपने अध्यापक के लिए, अपने विद्यालय के लिए और खुद के लिए . . . .

मंच से उठी तालियों की आवाज़ के सामने मेरी मन ~~में~~ ~~बची~~ ~~की~~ में उठी हौसला और गहरा हो गया।